अप्रैल २०१५

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

मॉरेलिटी

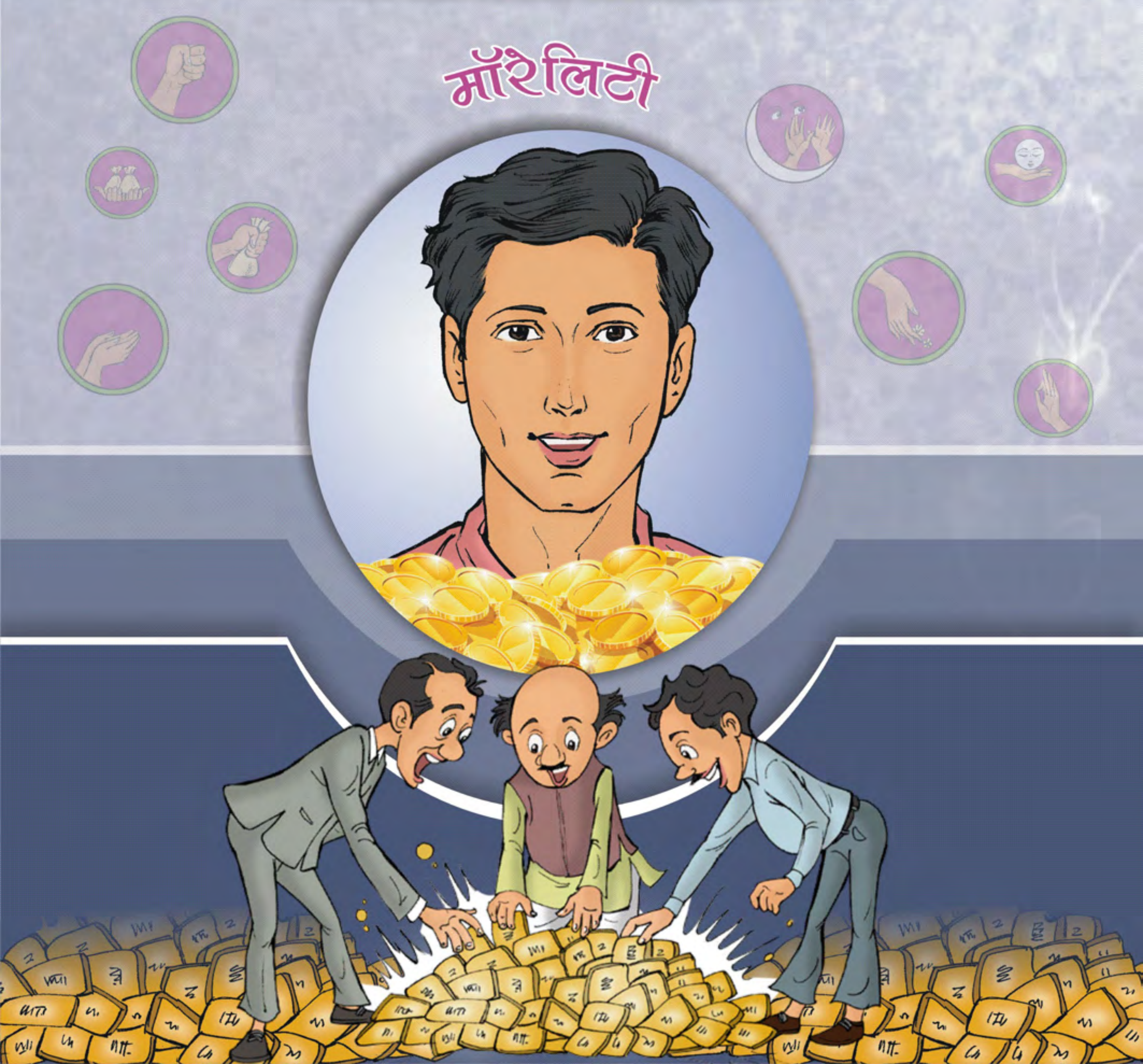

मॉरेलिटी

संपादकीय

बालमित्रों

इस दुनिया में अगर सब से ज्यादा कीमत किसी चीज़ की है तो वह है "सिन्सियारिटी" और "मॉरेलिटी"। सिन्सियारिटी के बारे में हम पहले ही जान चुके हैं। इस अंक में हम मॉरेलिटी को उसकी व्याख्या सहित समझेंगे। जो व्यक्ति मॉरल हो गया, उसके सभी दुर्गुण भी नाश हो जाते हैं।

मॉरेलिटी में ऐसा क्या होता है कि उस ओर गया हुआ इंसान मोक्ष के एकदम नज़दीक कहलाता है? मॉरेलिटी का मतलब क्या है? उसकी कीमत क्या है? मॉरेलिटीवाला इंसान कैसा होता है? उसे विकसित करने के लिए क्या करना चाहिए? उसकी अद्भुत समझ परम पूज्य दादाश्री ने इस अंक में दी है।

तो आइए, मॉरेलिटी की सुंदर बातें जानकर उस दिशा में आगे बढ़ें।

- डिम्पल मेहता

अनुक्रमणिका

३ दादाजी कहते हैं...
४ पराया खेत
६ यह तो नई ही बात!
८ टिकट विंडो
१२ चलो खेलें...
१३ अपने आपको परखकर देखो!
१४ जीवंत उदाहरण
१६ ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ
१८ मीठी यादें

अक्रम एक्सप्रेस

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : ३ अंक : १
अखंड क्रमांक : २५
अप्रैल २०१५

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website:
kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं ...

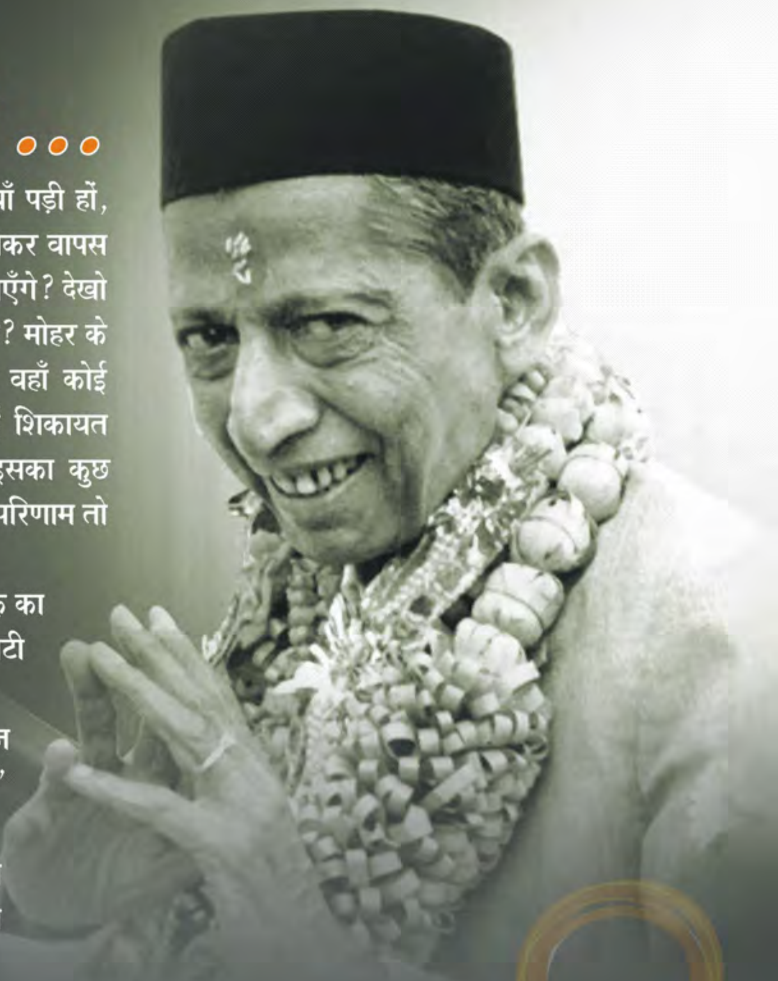

दादाश्री : यदि एक मकान में सोने की गिन्नियाँ पड़ी हों, जिसे सँभालनेवाला कोई न हो और वहाँ सिर्फ देखकर वापस आ जाना हो, तो कितने लोग मुट्ठी में लेकर नहीं आएँगे? देखो न, अपना मॉरल तो देखो! कितना डाउन हो गया है? मोहर के लिए तुमने अपना मन बिगाड़ दिया? हाँ लेकिन वहाँ कोई सँभालनेवाला या डाँटनेवाला नहीं था, और कोई शिकायत करनेवाला भी नहीं था, इसलिए ले लीं। अरे, इसका कुछ परिणाम तो आएगा या नहीं? प्रत्येक चीज़ का कुछ परिणाम तो होता है या नहीं?

एक तिनका भी हमें नहीं लेना चाहिए। बिना हक का कुछ भी नहीं लेना चाहिए। यह तो लोगों को मोरेलिटी की कुछ भी कीमत ही नहीं है।

मॉरल अर्थात खुद के हक का और जो सहज मिल जाएँ उतनी ही चीज़ें भोगने की छूट! "मॉरेलिटी" का यह अंतिम अर्थ है।

ये मॉरल क्यों इतना नीचे गिर गया? लोगों का देखकर कि "ये बड़े लोग ऐसा करते हैं, तो मुझे क्या परेशानी है?

प्रश्नकर्ताः देखा-देखी से होता है न?

दादाश्री : हाँ लोगों को पता है कि यह बड़ा आदमी है! अरे, जिसका मॉरल न हो उसे "बड़ा" कैसे कह सकते हैं? लोग भले ही उसे बड़ा कहें लेकिन तुम क्यों उसे बड़ा मानते हो? मॉरल तो होना चाहिए न! मॉरल के बिना कोई इंसान कैसे कहलाएगा?

प्रश्नकर्ता : लेकिन आजकल लोगों में मॉरल जैसा कुछ है ही कहाँ?

दादाश्री : इसीलिए तो उनकी कीमत नहीं है न? यों भले ही बड़ा आदमी कहें लेकिन मॉरल न हो तो "नो वैल्यू।" इसलिए उसे देखकर हमें "इन्फिरियारिटी कॉम्प्लेक्स" नहीं होना चाहिए।

बल्कि वह "इन्फिरियर" है और तुम सुपीरियर हो क्योंकि तुम मॉरलवाले इंसान हो, इसलिए। बल्कि तुम्हें देखते ही उसे घबराहट हो जाएगी। इसलिए मॉरल तो देखो। जितना हो सके उतना लोगों का मॉरल बढ़ाना चाहिए। उदाहरण भी मॉरल के देने चाहिए।

पराया खेत

बाजीराव पेशवा ने मालवा देश पर चढ़ाई की और मालवा देश के राजा को हरा दिया। राजा से बहुत सारा धन आदि लेकर वह लौट रहा था।

कुछ दिन बाद, रास्ते में बाजीराव की सेना के पास अनाज कम हो गया। महाराष्ट्र देश वहाँ से बहुत दूर था। अनाज के बिना कैसे चले? बाजीराव ने नदी के किनारे अपना पड़ाव डाला। उन्होंने अपने नायक को बुलाकर कहा, "थोड़े लोगों को लेकर आप आसपास के प्रदेश में चले जाओ। वहाँ से ज़रूरत लायक अनाज बोरे में भरकर ले आओ। थोड़े दिन चले उतना

आखिर में उन लोगों ने एक बूढ़े इंसान को सामने से आते हुए देखा। तेज़ी से घोड़ा दौड़ाकर वे उसके पास पहुँच गए।

मिल जाए तो भी ठीक है। आगे का बाद में देख लेंगे।"

नायक तुरंत ही कुछ लोगों को लेकर निकल पड़ा। आसपास का प्रदेश विरान था। पहाड़ी और निर्जन प्रदेश में वे कितने ही मीलों तक भटकते रहे।

आखिर में उन लोगों ने एक बूढ़े इंसान को सामने से आते हुए देखा। तेज़ी से घोड़ा दौड़ाकर वे उसके पास पहुँच गए।

वृद्ध को रोककर नायक बोला, "ए बूढ़े, हम बाजीराव पेशवा महाराज साहब के लोग हैं। हमारे पास अनाज कम पड़ गया है। क्या आसपास में कोई अनाज का खेत है? चल हमारे साथ और हमें जल्दी से ऐसा खेत दिखा। वर्ना आज हम तुम्हें जीवित नहीं जाने देंगे।"

उस वृद्ध ने शांति से कहा : "भाईयों! मेरे पीछे-पीछे आओ। आपको अच्छे अनाजवाला खेत दिखलाता हूँ।"

नायक और उसके साथी वृद्ध के पीछे घोड़े पर धीरे-धीरे जाने लगे। थोड़ी दूर जाने पर एक खेत आया। उसे देखकर नायक और उसके साथी खुश हो गए। लेकिन उस वृद्ध ने कहा, "साहब, थोड़ी दूर एक दूसरा खेत भी है, वहाँ से आपको जितना चाहिए उतना अनाज खुशी से ले लेना।"

नायक को लगा की आगे के खेत में ज्यादा अच्छा अनाज होगा।

नायक और उसके साथी वृद्ध के पीछे घोड़े पर धीरे-धीरे जाने लगे।

इसलिए, वृद्ध का कहना मानकर सभी आगे जाने लगे। थोड़े दूर जाने पर एक दूसरा खेत दिखाई दिया। यह खेत पहलेवाले खेत से छोटा था और फसल भी कम थी।

वृद्ध उस खेत के पास रुककर बोला : "साहब, इस खेत में से आपको जितना चाहिए उतना अनाज खुशी से ले लो।" यह सुनकर नायक गुस्सा हो गया। "अरे बूढ़े, ऐसा लगता है कि तेरे सिर पर मौत मंडरा रही है! हमें इतना घुमाकर ऐसे बेकार से खेत के पास क्यों ले आया?"

वह वृद्ध शांति से बोला : "साहब वह खेत दूसरे का था। दूसरे के अनाज को यों ही लुटवा देने का मुझे क्या अधिकार है? यह खेत तो मेरा खुद का है। उसमें से आपको अनाज देने में मुझे बिल्कुल भी संकोच नहीं होगा। आप खुशी से जितना चाहें उतना अनाज ले जाइए।" यह सुनकर नायक और उसके साथियों को बहुत आश्चर्य हुआ! वे सभी वृद्ध किसान की नैतिकता को देखते ही रह गए।

यह तो दुनिया का नियम है कि यदि मॉरलवाले को इममॉरल इंसान मिले तो वह (इममॉरल) घबराएगा। इसलिए मॉरेलिटी की कीमत बढ़ाने जैसी है।

नीति होगी और पैसा कम होगा तब भी उसे शांति रहेगी और अगर नीति न हो लेकिन पैसे बहुत हों तो उसे अशांति रहेगी। नैतिकता (मॉरेलिटी) के बिना धर्म नहीं है। धर्म का आधार ही नैतिकता है!

प्रमाणिकता, नैतिकता (मॉरेलिटी) और ऑब्लाईज़िंग नेचर हो तो सभी दुर्गुण धुल जाते हैं।

दूसरों को तुम देते हो, वह देवधर्म कहलाता है लेकिन दूसरे के हक़ का ले नहीं लेते हो तो वह मानवधर्म कहलाता है।

यह तो
ही

नई बात!

किसी का भोग लूँ, किसी का ले लूँ और बिना हक़ का भोगते रहते हैं तो उसे नरक में जाना पड़ता है। वहाँ भयंकर दुःख भुगतने पड़ते हैं।

प्योर चीज़ जगत् को आकर्षित बनाती है। इमप्योर चीज़ दुनिया को फ्रेक्चर करती है, इसलिए प्योरिटी रखनी चाहिए।

पूरे जगत् का "बेसमेन्ट" "सिन्सियारिटी" और "मॉरेलिटी" ये दो ही चीज़ें हैं। यदि ये दोनों सड़ जाएँ तो सबकुछ बिगड़ जाएगा। इस काल में "सिन्सियारिटी" और "मॉरेलिटी" हो तो वह सब से बड़ा धन कहा जाएगा।

पाशवता का मतलब बिना हक़ का ले लेना। बिना हक़ का खा जाना। बिना हक़ का संग्रह करने का सोचना। हक़ का हमारे पास आए तो उसमें कोई परेशानी नहीं है।

टिकट विंडो

थियेटर के बाहर भीड़ जमा हो गई थी।
शो तो सुपर हिट है। सभी शो हाउस फुल जा रहे हैं।
उसी समय एक स्त्री, विंडो के पास आई।
तीन टिकट, प्लीज़।
पर्स से पैसे निकालते हुए।
कितनी अजीब बात है कि अपने ही बच्चे का अभिनय देखने के लिए पैसे देने पड़ रहे हैं। क्या स्कूलवाले माता-पिता से टिकट के पैसे ले सकते हैं?
बहन, स्टेज और कोस्च्यूम के पैसे चुकाने के लिए ही टिकट के पैसे ले रहे हैं और देना भी ज़रूरी नहीं है यदि आप नहीं दे पाएँ तो....
नहीं, मुफ्त में नहीं चाहिए। पैसे ले लो।

वह स्त्री ज़रा एक तरफ खिसक गई तभी वहाँ पर एक छोटे से लड़के ने कुछ सिक्के निकालकर टिकट विंडो पर रखे।
कितनी टिकट चाहिए?
मुझे टिकट नहीं चाहिए।
तो ये पैसे किसलिए हैं?
शो तो मैंने कल रात को देख लिया था। कल रात मैं अपने भाई के साथ शो देखने आया था, तब टिकट विंडो पर कोई नहीं था, इसलिए टिकट लिए बिना ही हमने शो देख लिया था।
इसलिए आज मैं उसके पैसे देने आया हूँ।

कितनी मेहनत से इस बच्चे ने इतनी रेजगारी जमा की होगी। बच्चे से पैसे कैसे ले सकता हूँ?
बेटा, कल टिकट विंडो पर कोई नहीं था इसलिए तुम टिकट नहीं ले पाए। अब तुम इसकी चिंता मत करो। किसी को पता नहीं था और कुछ फर्क नहीं पड़ता।
किसी को नहीं, लेकिन मुझे फर्क पड़ता है। किसी को पता नहीं था। इससे मैं अपना मन क्यों बिगाड़ूँ?
खुद की किफायत से बचाए हुए पैसे खर्च करके भी यह टिकट की कीमत चुकाने को तैयार है लेकिन मुफ्त में शो देखना मंजूर नहीं है। कैसी ज़बरदस्त मॉरेलिटी!
अंकल कहाँ खो गए? बताइए न कितने रुपये हुए!
बेटा, दो टिकट के तीस रूपए होंगे।

तीस रूपए गिनकर बच्चे ने तुषार के हाथ में रखे और मुस्कुराते हुए वहाँ से चला गया।
बालक और तुषार की बातचीत सुनकर, साइड में खड़ी हुई स्त्री को थोड़ी देर पहले खुद के किए हुए बरताव पर बहुत अफसोस हुआ।
एक्सक्यूज़ मी भाई, यह चेन्ज (बाकी के बचे हुए पैसे) भी तुम ही रख लो। शो में सीनरी ब्यूटीफुल है, और कोस्च्यूम भी सस्ते तो नहीं होंगे न!
उस छोटे से बालक को कहाँ पता था कि उस दिन उसने तुषार और उस स्त्री को मॉरेलिटी का कितना बड़ा पाठ पढ़ा दिया!

चलो खेलें

१. मित्रो, बाजु में दिए गए चित्र में कितने चौरस हैं? उन्हें ढूँढो

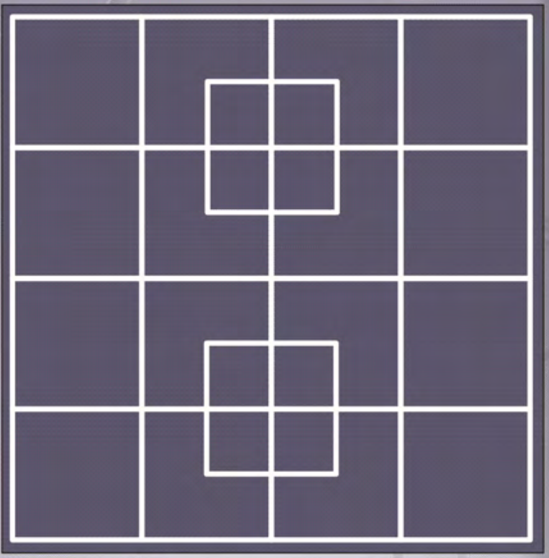

२. बाजु में दी गई दियासलाइयों में से किसी भी तीन दियासलाइयों की जगह बदलकर षट्कोण बनाइए।

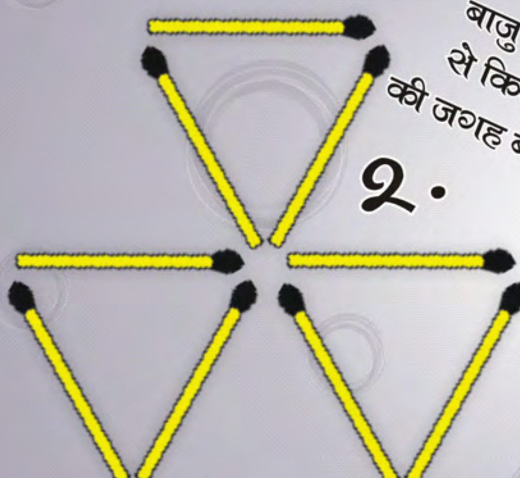

३. नीचे दिए गए चित्र में कौन सा प्राणी है? उसे पास में बताए गए विकल्प में खोजो।

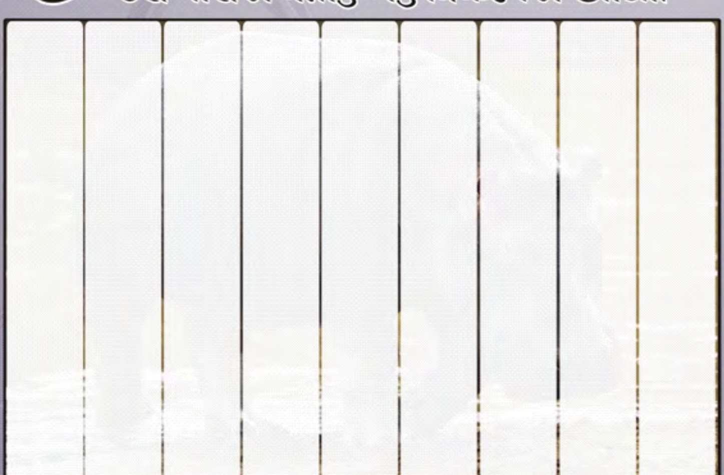

- गिलहरी
- हिपोपोटेमस
- डुक्कर
- हाथी

४. बाजु में दिए गए बिंदुओं को जोड़कर चित्र बनाइए।

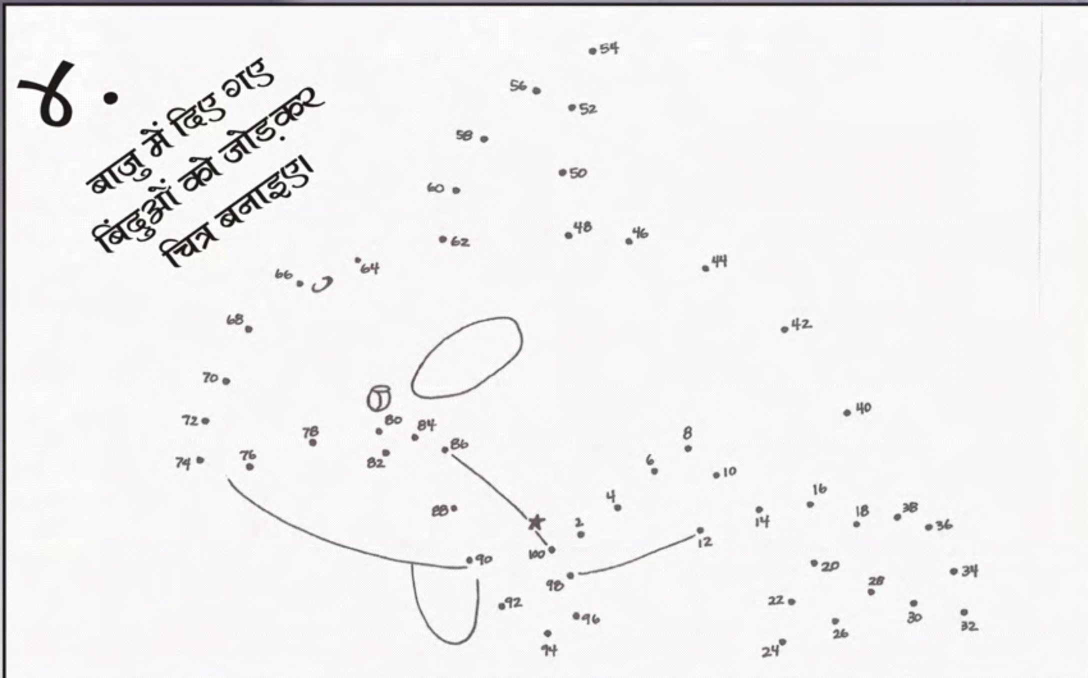

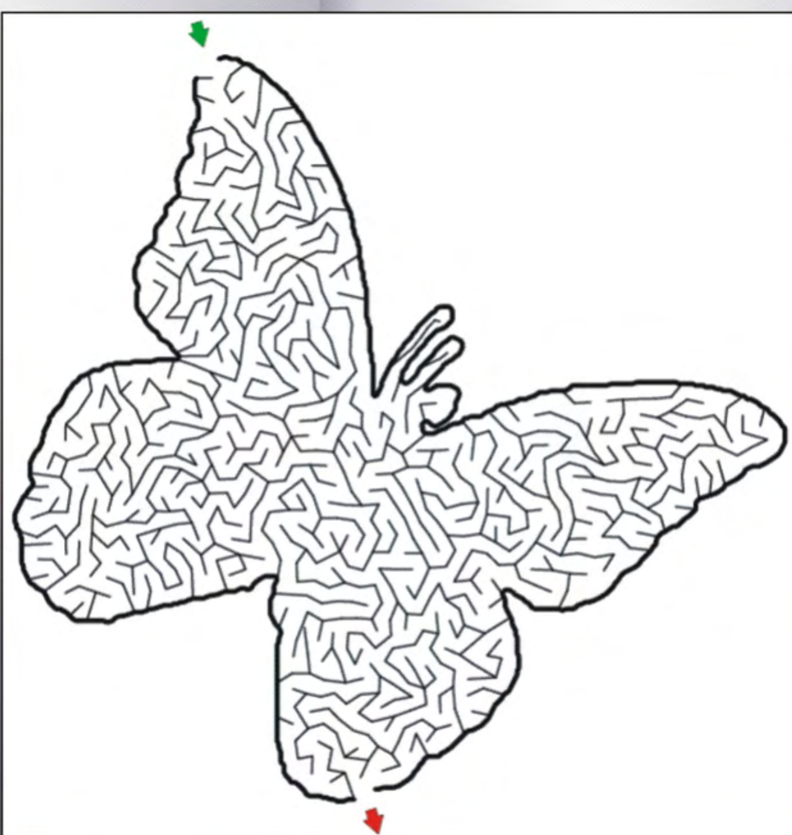

५. बाजु में बताए गए चित्र में से रास्ता ढूँढो।

जीवंत उदाहरण

वेराभाई दरबार का नाम सुनते ही लोग काँप उठते थे। वेराभाई और उनके साथी इतने बहादुर ठग थे कि वे दिन दहाड़े लूट-पाट करने पर भी कभी पकड़े नहीं जाते थे।

लेकिन जिस दिन से वेराभाई श्री जी महाराज से मिले, उस दिन से उनमें ग़ज़ब का परिवर्तन आ गया! वेराभाई सभी गुनाह छोड़कर सत्संगी बन गए। उनमें इतना बदलाव आ गया था कि उन्हें किसी को मारने का विचार भी आए, तो वे उस दिन पश्चाताप के रूप में उपवास करते थे और इसलिए सभी उन्हें "वेरा भगत" के नाम से संबोधित करते थे।

"अरे मूर्ख, इस खेत के मालिक की अनुमति के बिना तू डाली कैसे तोड़ सकता है? बिना पूछे तूने डाली तोड़ी इसलिए यह बिना हक़ की चीज़ कहलाएगी। बिना हक़ की चीज़ लेकर तूने महाराज की आज्ञा का उल्लंघन किया है।"

एक दिन वेरा भगत एक खेत के पास से गुज़र रहे थे। वहाँ उनकी नज़र एक बबूल के पेड़ पर पड़ी। उस पेड़ को देखकर उन्हों ने सोचा, "इस पेड़ का दातुन, दाँत साफ करने के लिए उत्तम रहेगा।"

ऐसा सोचकर, वेराभाई ने एक छोटी सी डाली काट ली।

और अचानक, उनके भीतर से एक आवाज़ आई, "अरे मूर्ख, इस खेत के मालिक की अनुमति के बिना तू डाली कैसे तोड़ सकता है? बिना पूछे तूने डाली तोड़ी इसलिए यह बिना हक की चीज़ कहलाएगी। बिना हक़ की चीज़ लेकर तूने महाराज की आज्ञा का उल्लंघन किया है।"

और फिर वेराभाई को खुद के किए पर बहुत पछतावा हुआ। उनके मन में विचारों की आँधी उठी, "क्या करूँ? किससे कहूँ? खुद को सजा किस तरह दूँ? उपवास करूँ या फिर दस गुना दान दूँ? क्या मैं महाराज की कृपा खो दूँगा?

घर जाकर वे सीढ़ियों पर बैठ गए। मन थोड़ा शांत हुआ। उन्होंने ठाकुर जी की दीपक-आरती की। और फिर मन में विचार आया, "भूल तो मैंने की है लेकिन अब इस भूल का प्रायश्चित कैसे करूँ? क्या करूँ ताकि फिर से ऐसी भूल नहीं

हो?"

और वे किसान के घर की ओर चल पड़े। अंधेरा हो गया था। किसान, घर के आँगन में खटिया बिछाकर बैठा हुआ था।

"मुझे माफ कर दीजिए। मुझ से बहुत बड़ी गलती हो गई। मैंने चोरी की है"ऐसा कहकर वेराभाई किसान के पैरों में गिर पड़े।

"वेरा भगत आप? यों अचानक? क्या हो गया?" वेरा भगत का बरताव किसान की समझ में नहीं आया।

खुद की गलती कबूल करते हुए वेरा भगत ने कहा, "आपकी अनुमति के बिना मैंने आपके बबूल के पेड़ से एक डाली तोड़ी थी। मुझे पता है

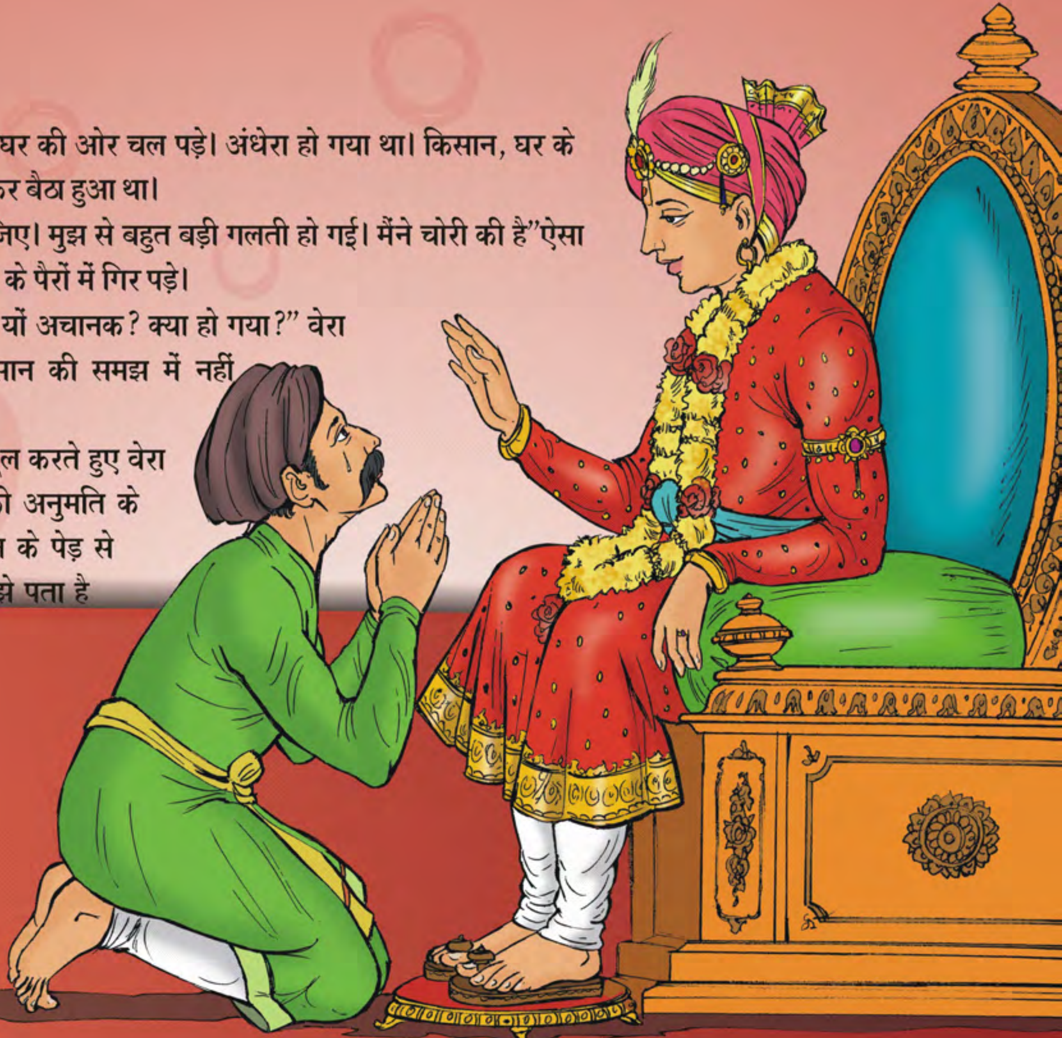

कि बिना हक का कुछ भी भोगेंगे तो बहुत बड़ी सजा भुगतनी पड़ती है। मुझे माफ कर दो।"

वेरा भगत की नैतिकता देखकर किसान स्तब्ध रह गया। "सत्संग से एक ठग में भी इतना परिवर्तन आ सकता है?"

वेरा भगत को सांत्वना देते हुए वह बोला, "अरे वेरा भगत! एक छोटी सी डाली ले ली तो क्या हुआ। आप बेकार ही अफसोस कर रहे हो!"

लेकिन एक छोटी सी गलती की वजह से वेरा भगत को श्री जी महाराज की कृपा नहीं खो देनी थी। दूसरे दिन श्री जी महाराज के पास अपनी गलती को कबूल करने का उन्होंने निश्चय किया। महाराज ने वेरा भगत की सारी बातें सुनी। उनकी आँखों में महाराज ने सच्चा प्रायश्चित देखा।

"किसी भी गलती का यदि तुम दिल से पश्चाताप करो, तो वह गलती धुल जाती है" ऐसा कहकर महाराज ने वेरा भगत को दिल से आशीर्वाद दिया।

ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ

यह बात भगवान नेमिनाथ से दीक्षा लिए हुए ढंढण मुनि की है। दीक्षा लेने के बाद ऐसा होता था कि भिक्षा लेने के लिए वे जहाँ भी जाएँ, वहाँ से उन्हें शुद्ध भिक्षा मिलती ही नहीं थी। इसलिए उन्होंने अभिग्रह लिया (निश्चय किया) कि "जब मैं अपनी स्वयं की लब्धि (सिद्धि) से अन्न प्राप्त करूँगा, तभी उपवास छोड़ूँगा, तब तक उपवास नहीं छोड़ूँगा और अन्य मुनियों द्वारा लाया हुआ आहार भी नहीं करूँगा।"

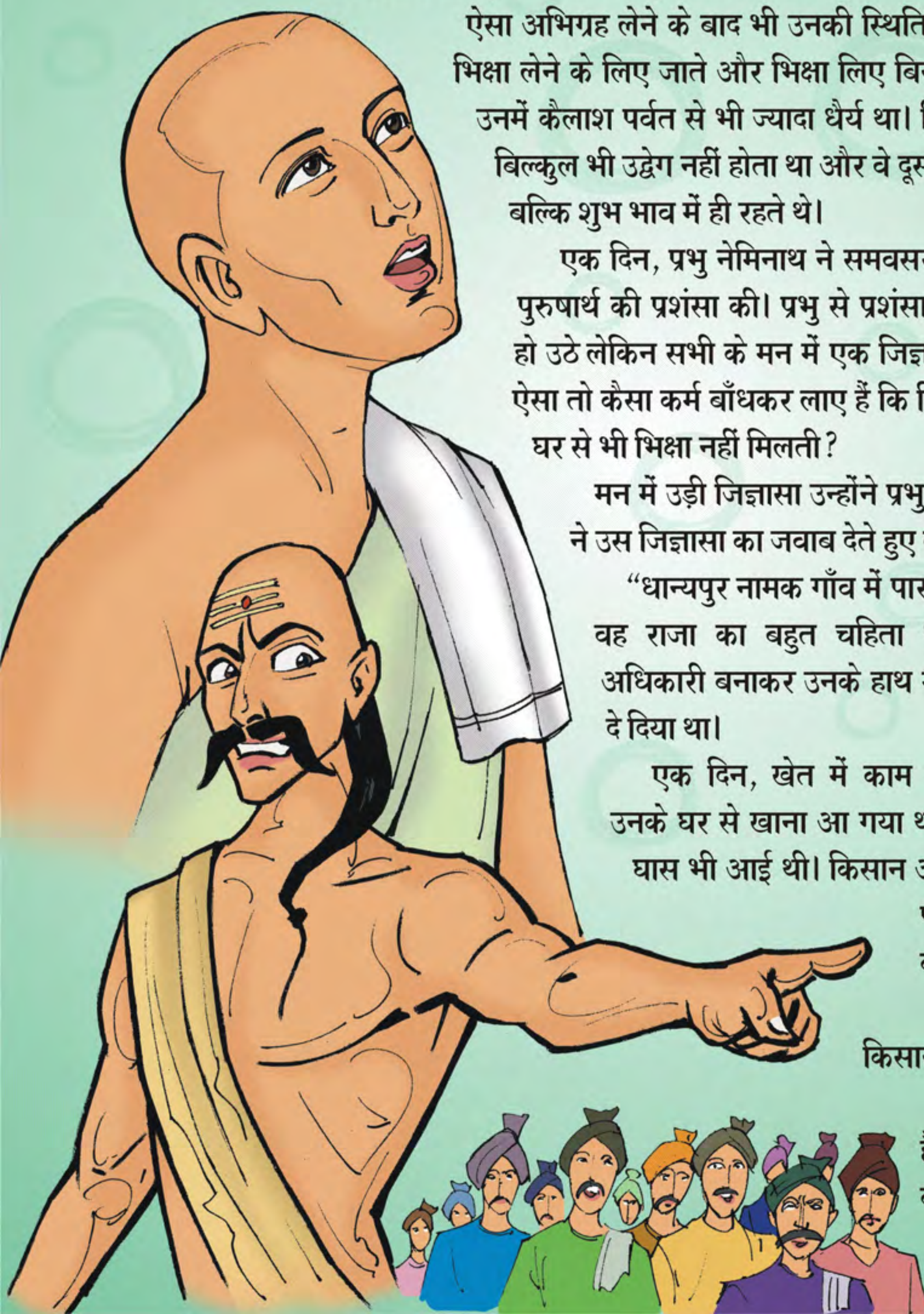

ऐसा अभिग्रह लेने के बाद भी उनकी स्थिति पहले जैसी ही रही। प्रतिदिन भिक्षा लेने के लिए जाते और भिक्षा लिए बिना ही वापस आते थे। लेकिन उनमें कैलाश पर्वत से भी ज्यादा धैर्य था। भिक्षा नहीं मिलने पर भी उन्हें बिल्कुल भी उद्वेग नहीं होता था और वे दूसरों की निंदा भी नहीं करते थे, बल्कि शुभ भाव में ही रहते थे।

एक दिन, प्रभु नेमिनाथ ने समवसरण में ढंढण मुनि के तप और पुरुषार्थ की प्रशंसा की। प्रभु से प्रशंसा सुनकर सभी साधु आनंदित हो उठे लेकिन सभी के मन में एक जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि ढंढण मुनि ऐसा तो कैसा कर्म बाँधकर लाए हैं कि जिसके कारण उन्हें श्रावकों के घर से भी भिक्षा नहीं मिलती?

मन में उड़ी जिज्ञासा उन्होंने प्रभु के सामने व्यक्त की और प्रभु ने उस जिज्ञासा का जवाब देते हुए कहा कि-

"धान्यपुर नामक गाँव में पारासर नामक ब्राह्मण रहता था। वह राजा का बहुत चहिता था। इसिलए राजा ने उन्हें अधिकारी बनाकर उनके हाथ में पाँच सौ खेत का अधिकार दे दिया था।

एक दिन, खेत में काम करनेवाले किसानों के लिए उनके घर से खाना आ गया था। दूसरी तरफ बैलों के लिए घास भी आई थी। किसान और बैल सभी भूखे थे लेकिन पारासर ने पाँच सौ किसानों को खाने की अनुमति नहीं दी।

"लेकिन हमें भूख लगी है" किसान विनती करते हुए बोले।

"आपको अभी नहीं खाना है।" पारासर ने सख्त शब्दों में कहा।

सभी साधु आनंदित हो उठे लेकिन सभी के मन में एक जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि ढंढण मुनि ऐसा तो कैसा कर्म बाँधकर लाए हैं कि जिसके कारण उन्हें श्रावकों के घर से भी भिक्षा नहीं मिलती?

"लेकिन कारण क्या है?" किसानों ने पूछा।

"मेरे खेत की एक-एक क्यारी जोत लो। "उसके बाद ही तुम्हें खाने की अनुमति मिलेगी।" पारासर ने कहा।

क्या कर सकते थे वे पाँच सौ किसान! उनके शरीर में कोई ताकत नहीं थी, फिर भी पारासर के दबाव की वजह से वे मन मारकर खेत जोतने लगे। जैसे-तैसे करके जुताई करके वे खाना खाने बैठे।

पारासर ही ढंढण मुनि है। पाँच सौ किसान और बैलों के भोजन में रुकावट डालने की उन्होंने जो गलती की थी, उसी के फलस्वरूप इस जन्म में उन्हें भोजन नहीं मिल रहा है।"

प्रभु की वाणी सुनकर साधुओं के मन का समाधान हुआ। इस तरफ ढंढण मुनि अपने कर्मों को शांत भाव से पूरा करके केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष में गए।

पज़ल के जवाब

१. ४०

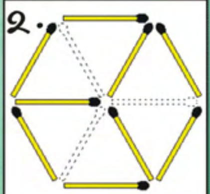

हिपोपोटेमस

अपने आपको परखकर देखो

नीचे दिए गए "ट्रेज़र हंट" के गेम में सही खज़ाना ढूँढो। नीचे चार घटनाएँ दी गई हैं। जवाब के लिए योग्य ऑप्शन को पसंद करके, उस ऑप्शन में से "क्लू अक्षर" प्राप्त करो। "क्लू अक्षर" को योग्य ढंग से जोड़कर शब्द बनाओ। बना हुआ शब्द ही "ट्रेज़र हंट" का सही खज़ाना है!

१. निर्मला आँटी, काव्या और क्षिति के लिए बहुत सारी चोकलेट्स लाए। क्षिति समर केम्प में गई थी, इसलिए आँटी ने काव्या को चोकलेट्स बाँटने की ज़िम्मेदारी सौंपी। चोकलेट्स काव्या को बहुत पसंद थीं। उसे लगा कीः

ए. "चोकलेट्स से क्षिति के दाँत खराब हो जाएँगे, यदि मैं ज़रा ज्यादा ले लूँ तो उसी के लिए अच्छा है!

(जवाब क्लू : म्मो)

बी. "ठीक से बाँटकर, क्षिति के पैकट पर लेबल लगाकर मैं फ्रिज़ में रख देती हूँ। चोकलेट्स देखकर क्षिति कितनी खुश होगी!"

(जवाब क्लू : लि)

सी. "थोड़ी चोकलेट्स अभी टेस्ट कर लेती हूँ। क्षिति को कहाँ पता चलनेवाला है?"

(जवाब क्लू : री)

२. "अरे वाह! बहुत अच्छा प्रोजेक्ट बनाया है," टीचर ने विहा को शाबाशी देते हुए कहा, विहा ने प्रोजेक्ट सौम्या की मदद से बनाया था। उसने टीचर से कहा,

ए. "थेंक यू टीचर। लेकिन इस प्रोजेक्ट का क्रेडिट सौम्या को जाता है। यह प्रोजेक्ट बनाने में उसने बहुत मेहनत की है।"

(जवाब क्लू : रे)

बी. "थेंक यू टीचर, आई एम ग्लेड कि आपको पसंद आया।"

(जवाब क्लू : ल)

सी. "थेंक यू टीचर। रातभर जागकर मैंने यह प्रोजेक्ट तैयार किया था।"

(जवाब क्लू : न्फी)

३. नकुल अपने फ्रेन्डस के साथ शोपिंग मॉल में गया। नकुल के दोस्त विकास ने सभी से कहा, "दोस्तों, आज हम एक गेम खेलते हैं। शॉप में से हम चोरी से एक चीज़ उठा लेंगे। जो सब से अच्छी चीज़ उठाएगा, वह इस गेम का विजेता होगा।"

नकुल को लगाः

ए. "यदि मैं गेम नहीं खेलूँगा तो विकास मुझे उसके ग्रुप से बाहर निकाल देगा, इसलिए मैं उसके कहे अनुसार करूँगा।"

(जवाब क्लू : ई)

बी. "मैं बिना हक का कुछ भी नहीं लूँगा। विकास ग्रुप का लीडर बनकर घूमता है लेकिन मैं उससे डरकर अपना मॉरल डाउन नहीं करूँगा।"

(जवाब क्लू : मो)

सी. "शॉप में से एक चीज़ कम हो जाएगी तो शॉपवालों का क्या नुक्सान हो जाएगा? मैं तो मेरा फेवरेट टी-शर्ट उठा लूँगा।"

(जवाब क्लू :२)

४. स्टेट लेवल टेनिस कॉम्पिटिशन में भाग लेने के लिए ईशान का सिलेक्शन हुआ। कॉम्पिटिशन के आठ दिन पहले ईशान की तबियत खराब हो गई। यदि कॉम्पिटिशन से पहले ईशान की तबियत ठीक नहीं हो पाई तो आयुष को ईशान की पोज़िशन मिलने की संभावना थी। आयुष को लगाः

ए. "कॉम्पिटिशन से पहले आयुष की तबियत ठीक न हो और मुझे यह चान्स मिल जाए।"

(जवाब क्लू ई)

बी. "हर साल ईशान सिलेक्ट होता है। एक साल वह नहीं जाएगा तो क्या हो जाएगा? मुझे ही चान्स मिलना चाहिए।"

(जवाब क्लू :र)

सी. इस कॉम्पिटिशन के लिए ईशान ने कितनी मेहनत की है। यही मेरी प्रार्थना है कि स्वस्थ होकर वह कॉम्पिटिशन में भाग ले सके।

(जवाब क्लू : टी)

जवाब :- १-बी, २-ए, ३-बी, ४-सी क्लू अक्षर : लि, रे, मो, टी शब्दः मो, रे, लि, टी

मीठी यादें

एक बार नीरू माँ महात्माओं के साथ सत्संग के लिए किसी गाँव में गए थे। नीरू माँ के चरण स्पर्श का कार्यक्रम चल रहा था। ऐसे में एक परिचिता नीरू माँ के दर्शन के लिए आई। नीरू माँ ने उनसे कहा, "अभी नहीं" ।

उन बहन की प्रकृति मानवाली थी, इसलिए उन्हें तो बुरा लग गया। उनके चेहरे की हँसी गायब हो गई। उनका खाना-पीना सबकुछ छूट गया। भीतर ज़बरदस्त घमासान चल रहा था कि रात-दिन साथ में रहने के बावजूद भी अगर चरण स्पर्श करने नहीं मिलें तो क्या मतलब? उन्हें चैन ही नहीं आ रहा था।

दूसरी तरफ भीतर में समाधान भी दिया जा रहा था कि जब ज्ञानी हमें कोई सीख देना चाहते हों, तब हमारी ऐसी परीक्षा लेते हैं। आखिर में अपने हित के लिए ही है, वगैरह, वगैरह....

उसी दिन शाम को सभी अहमदाबाद आने के लिए वापस आ रहे थे। जिस गाड़ी में वे बहन थीं उसी गाड़ी में नीरू माँ भी थे। रास्ते में जब एक बहन के उतरने के बाद नीरू माँ के पास थोड़ी जगह हुई। तब नीरू माँ ने उन बहन से कहा, "आईए, आईए, बहन, आगे आकर हमारे पास बैठो।"

वह बहन रूठी हुइ थीं इसलिए थोड़ी आनाकानी करने के बाद आई और नीरू माँ से कहा, "आपने विधि नहीं की इसलिए मुझे बहुत बुरा लगा है।"

नीरू माँ ने कहा, "ऐसा!"

फिर नीरू माँ उन बहन से खूब बातें करने लगे। उनके साथ बहुत बातें करके नीरू माँ ने उन्हें नोर्मल कर दिया।

रास्ते में बहन का घर आने पर उन्हें उतारकर नीरू माँ को आगे जाना था। तभी नीरू माँ बोले, "गाड़ी अंदर ले लो, हम इनके घर जाएँगे।"

महात्मा बहन को बहुत आश्चर्य हुआ लेकिन वे पूछ नहीं पाई। नीरू माँ उनके घर गए, सोफे पर बैठे और उन बहन से कहा, "लो विधि कर लो।"

यह सुनकर महात्मा बहन तो गद्‌गद् हो गई। उन्हें लगा, "ग़ज़ब के हैं नीरू माँ! कड़ी भूख और थकान होते हुए भी मेरे घर आकर सामने से मुझे विधि करवा रहे हैं। यदि वे चाहते तो मुझ से दो शब्द कहकर अथवा "हम परीक्षा ले रहे थे,' ऐसा कहकर भी समझा सकते थे।"

वे तो नीरू माँ के चरणों में गिरकर रो ही पड़ीं।

ज्ञानी के लिए इंसान के हृदय की कितनी कीमत होती है! सामनेवाले की गढ़ाई भी होती है, कचरा भी निकल जाता है और साथ ही उनके मन को समाधान भी मिल जाता है और सभी को प्रेम से जीत लें, उनकी ऐसी अद्‌भुत कला होती है!

Akram Express

April 2015
Year : 3, Issue : 1
Conti. Issue No.: 25

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

पूज्यश्री के ज्ञानदिन पर सीमंधर सिटी के बच्चोंने किया कल्चरल शो

बच्चों के लिए
भक्तिगीत
की ऑडीओ CD
GNC-7
का ओपनिंग

पूज्य नीरू माँ की पुण्यतिथि पर नीरू माँ याद
आएँ ऐसे भक्ति गीत पर बच्चों ने डान्स प्रस्तुत किया।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.